TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4481**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥ कर्मात नमस्कार [illegible] कालमांहि जिलावे [illegible] तेथि पारसनाथ [illegible] नाम दीधुं पारसकुमार
रदित [illegible] ज्ञाति [illegible] लक्ष्मी [illegible] वनप्रासि [illegible] इति [illegible] विमला [illegible] पूर्वलाभ [illegible] पुत्रिमह [illegible] विना [illegible] सपरी
गारसीनाग [illegible] पंचाग्नि [illegible] लोकमांहि [illegible] अनेक लोक [illegible] करि [illegible] विनसाविजां [illegible]
आव्या [illegible] नाम [illegible] हाथि [illegible] मातामहि [illegible] पक्षी [illegible] विनाशि [illegible] पंथी [illegible]
केत्य [illegible] मांहा मोटो [illegible] विद्वान [illegible] पार्श्व [illegible] जिनेन्द्र [illegible] स्यार्थी [illegible]
नाम [illegible] पिछान [illegible] करि [illegible] [illegible] विचारि [illegible] कोपकरी [illegible] कहिवा [illegible] जिम [illegible]
[illegible] विलास [illegible] विचार [illegible] विचारि [illegible] विचार श्लोक पंचम [illegible] विषयाह
[illegible] नेमा [illegible] पंचम पारसनाथ ॥ १ ॥ [illegible] पंचाग्नि साधक [illegible] विविध [illegible]
तेवारि [illegible] करि तेपंचाग्नि साधक [illegible] अनेक [illegible] तेम हाथ पगादि लोकः एकतः क
तत सर्वं [illegible] प्रातिमः [illegible] ॥ २ ॥ एकस्मा [illegible] अनेक [illegible] नयत [illegible]
[illegible] जीवदयानो [illegible] कोई धर्म [illegible] तिवारि [illegible] एक [illegible]
[illegible] लोकहु [illegible] तेमा [illegible] पाप [illegible] तिवारि [illegible] नमस्कार [illegible] तेम [illegible]
जीव [illegible] मरा [illegible] कुमार [illegible] [illegible] पारसनाथ [illegible] इति
[illegible] सर्प [illegible] लोक मांहि [illegible] लोकमांहि [illegible] अनेक [illegible]
सेवाकरता [illegible] पवित्र [illegible] एक [illegible] तिवारि [illegible]
[illegible] तिवारि [illegible] पवि [illegible] मांहि [illegible] तिवारि [illegible]
[illegible] नमस्कार [illegible] गंगा [illegible] मांहि [illegible] मनि चिंतावि
[illegible] चिंता [illegible] संसार [illegible] पाप करि [illegible]
[illegible] पाप [illegible] तेवारि [illegible] 1
[illegible] तिवारि [illegible] पाप [illegible] लोक
[illegible] तेचिंता [illegible] तिवारि [illegible] गंगा [illegible]

हिं तेमाटिं विष्णुकुमार मुनि नमुचि नारायणने पगे चांपि विष्णु नामा एकारणे हुता हिं तेमाटि विष्णुकुमारे लाख योजन रूप करीनें श्री गंगा नें
जल की विष्णु मुनि कहपदी हि तिवारि श्री गंगाजी इंद्रने कहे लखयोजन रूप करीनें युद्धे तिवारि पांडव पांचजने कौरव एकसत
इ तिवारि पांडवांनीं तीरथ श्री गंगाजी कौरवनुं हत्या पांडवजी पाप लागुं तिवारें एह श्री गंगाजी पापनीरा परा
गुरु ने पासे तेपा पांडव ने लागुं एहकारणे पाप धर्यो हि जेगागा की पापनर माहरो पाप गंगा नदी मोक्षि हिं तोय लीगंगा
बोलि वाद माहरि पापिकि तानीं नामि हुइ किहां कैलास पर्वतनी पासे पार्वती प्राणनाथ श्री महादेव ईश्वर लक्षणा सरा
जटमां हि तिवारे माहरा पाप संघला ईश्वरनें लागे तिवारि इक लख योगां गंगा ईश्वरनें पाप पीडि किम ईश्वर निपाचक षहता
सिकं सुति विष्णु वरता अनेपाव मिहु लिमा ईश्वर सर नीसरउ तिवारि ईश्वर ईश्वर लालके विंदिने पति श्रुति कराविदेउ इस हत्या लागी एका
रणे ते ईश्वर समस्त किहरी हि ईश्वर नें पाप पुण्य माहि आवै तिवारि गंगाकहि तिवारि कोइ एक एहवो रूप हुउ तम पुरुष माहरी यात्रा इ
आवस्यइ तिवारि तहनि पाप हि हो श्री पवित्र थाइ सुश्लोक परदार परद्रव्य परद्रोह पराङ्मुख गंगा प्याह क दागस्य मामयं मा
यापति १ अर्थः जे परदारा विमुख परद्रव्यक रिपरद्रोह तेहने महासमस्त पुण्य पगारी तिहनइ पगि लेस्यै श्री पवित्र थासु तिवारि देवे
इक रूप एहवो जे वखकस्यइ तेता हरी यात्राइ कोइ आवस्यै जो मन मचंगा तो कठवतमां गंगा एहवु तक स्यै तिवारि तिगंगा पवित्र था
वानि कोनि सहस्त्र वर्ष थइ मृत्युलोक माहि आवी अनम रहिवा लागी तिहांजा तो तेरां पासि नगरी श्रेयांस नरा यलगती
कुमार विद्या रसार गुणलंकार सार श्रृंगार रस कोस अनाथ नाथ श्री पार्श्वनाथ बीठा देवी करीवा णारसी पावतो वहेवा लागी तउ एकाउ
ण वाणारसी की मो वगाउ पायनाम ई गंगा श्री पार्श्वनाथना पगकी पवित्र हुइ तिगंगा पवित्र करी घरन इ विमइ पक्षरूया ग्रामे
अरहात सिनादपाणी ए दश के दर्शक मह एनो गंगा महात्म्य संपूर्ण॥ हो ते कउपसर्ग उपकरि तिहां देव मनुष्य तिर्यंच संबंधी या उपजे तेसहे भगवतने
ह इसमस्त प णिक लिकु न तीम नि विधि का उसग्ग कीधी तिवारे करमी टोहा थी हे ते श्री स्वामी रूप देवी स्या कमल ना फल करी कोश लोकः
यमद्यामामतपो निवासी माउ मंजेइ कमल रेरलणा श्री पार्श्वनाथक लिकुं ड नीर्थ संखां क्षितय हुउ तीर्थ नाम १ जेश्री भगवंति छदमस्थ
पणि जे हाथी इ सूपाने वाहि ता पूजा ता तारवाते ते श्री कलिकुंड तीर्थ तणी भाय कवा हि तार्थ सिरउ॥ इति कलिकुंड तीर्थ कथा नि परमेष्टि काथेते सो
एको श्री भगवंत काउ समग्ग मांहि हि तेक मठनेजी वसरीत हमालादेव सालउ परीसहा करवा लागो तिवारें धरणेंद्र पद्मावतीकि घणा प्रकार नाम
िस्वामि मरुभीप रिनिक्षरत निःकंप काणा नहीं तिवारे कमठि हमनुष्य रमना वर घलो कोपकरी मेघ वृष्टिकरवा लागो वृष्टि
वी जलनो कोलाहल करइ महा प्रकार मलि न वा सिंचा हे नरकि अत्यंत घोर घूघरा मास रामय वरसवा लागु देवशक्ति श्री स्वामी वृहि

इं जपा लियां आनि विधिमा जवि वरती पासाइ इ संघ लोक का की किरि कन्याना पासिं इंद्राणी कन्याना करे सुनंदा सुमंगला नो पाणी ग्रहण कर्यु तिं
साधकी विवाह मंडो समवसर तिकिइ पछि सुपती ज गवती सुमंगलाइं नरख जाडल्यो सुनंदा इ रूपवसु कुंअर पक्षकावर लनेतदरी सुखं बलीर
णपना सयुम लक्षण जया सरी वी सयल युगलनि युगली वा माली मासि वद्ध तेहवत्रं जाने सरसिला पक्को छिवरस...
कि सहम एतले वरसे एक अवनिए एहवो वीसलां मपूर्व कि मारव समनैम विजि हवि युगली आदि नप्रतिनानिज कलगर प्रतिपुत्रकार्य सा
रे वलते नो नीतिकुल गर कहि सर्वश्री ऋषभ सरवासा उने कषनदेवनें कहो ते युगली आने ईसकनदेव प्रति कहे तिवारे रूपदेव कहिजे कने
राज्य थापना करउ पछि युगली एह लि नित्रलो कोरा पछि युगली याप णि लेवा गया एतलि इंद्र नुं आसन कंपिवा लागु सारइंद्र आव्या सो
सिनि सिंहासनि नइ सारी सर्व आभरण अलंकार पहिराव्या मस्तकि छत्र धरइ राज्याभिषेक नी विधि साचवि एहवे युगली आप णि लेरा
वा तिहां युगली याने विमनाइ कपनो बे पाणी नांखी सर्व आलर्णवस्त्र लीज्ये एहवुं चित वी पाने श्रीरुडे पाणी नो थायु पुरुष विन
यकप र तेमाटि नगरी नुं नाम विनीता नगरी नाम दीधुं तिहां इंद्र वी स्थापना करी इंद्र जा मिगया पछि श्री घोडा रथ पाइक ने संग्रह कीधा
राज्य नस्य श्री ऋषभ देव राजा करीइ कल्प वृक्ष ना पदार्थ प्रसार त्या तिवारि युगलीया मनुष्य के दया आहारले ता कक्षा पछितेको
नपोतामे सिवही तिवारि भगवंत नें सुगलो आवी कहि अमने एणि आहारे अपूइं दुखइ पचइ नहीं तिवारि भगवंत कहि जेहा धमी
हिं हो की राषवइ अवाकाइ इवा ध रूरु इम आहार कर ता अरहा एहवि पत्ता विवन मां हि इमगा तिघसं विकरी अग्नि नी उत्पत्ति कीइ त्यारे युगलीये
कीनी देवा नेग वंतनें कहे वन मां हि कोइक वी ला वइ छइ तिवारि भगवंत विज्ञान करीने जो तुं बंद स्थान रनी उत्पति कीइ त्यारे युगलीये
इनें स्वामी कहि जे अहे आहार लि तेआहार एहमांहि घवावीना वरी अहे हा धुज रइ तिहांते फल आणी अग्नि मांहि मूक्या वलीतेहनी सारन के
रेएतलि ह वलीजा ए बलीज हस्वामी नइ कहि जे पवेता समर्थ पाई आइ छे पछि हाथीना खंध विसी माटी वेपि मले इहा थीने मांपिय हमीपा
रेएतलि स्वलीजा ए वलीज हस्वामी नइ कहि जे पवे ता सर्व खाइ अइ छे पछि हा धीनाखं धिनि सी माटी घेपि मले इदा थीने मां वियह नीपा
छ तेमां हि विवा नी माता कला पछि स्वामी पांच विज्ञान प्रगट कीधा प्रथम विज्ञान कुंभकारनुं बीजु चित्रकारनो हारनउ ची जुं वितान चितारकन्
सु तेमाटि घडवा नी मात्रा कक्षा पछि स्वामी पांच विज्ञानप्रगट कीधा प्रथम विज्ञान कुंभकार नुं बीजुं चित्रां लोहार नउं त्रीजुं चित्रकार नउं चउथु वणकर नउं पांचमुं
नावी विज्ञान नावी नुं पांच शुं विज्ञान करतां सो एपांचविज्ञान एकेकाना विस वीस भेद करतां सो एहविज्ञान नी जेहूवा हसी सुंदरीने ब्राह्मीने लिपि एमाल बीलिपि रनी 2
पिरकत लिपि यवन लिपि रा इक्ष लिपि अंकलिपि प्रयाविक लिपि द्रुम कीलि उ की रा लिपि प जावकीलि पि एसौ वीर लिपि इमालवी लिपि हरना
मीतलिपि २ नमारी लिपिइ ल्ला कलिपि प्रधानासी लिपि पक्षन मदीलिपि हसवाण कालि लिपि पद्मल देवी लिपि एउ लय पसा पनी श्रीक नी कला इ
गम्य की धी पछि पुरुष कला ७२ प्रगट कीधी ते हना नाम लिपिकला १ पठितकला २ गणितकला ३ गीतकला ४ नृत्यकला ५ वादकला ६ वांक कली कला

कामकंदप श्रलंकारत्वनाटिकाए साटिकार१ नखछेद्य२२ पत्रछेद्य२३ श्रायुध्याभ्यासकला२४ गजारोहण२५ तुरंगारोहण२६ गजशिक्षा२७ तुरंगम
शिक्षा२८ रथचर्या२९ ॥ ३० धनुर्वेद३१ खड्गशिक्षा३२ पक्षिलक्षण३३ मंत्रवाद३४ यंत्रवाद३५ रसवाद३६ विषवाद३७ विद्यानुवाद३८ गुप्ति
गुट्का तर्कवाद३९ संस्कृत४० प्राकृत४१ अपभ्रंश४२ प्रकान्तर४३ देशभाषा४४ कपटकला४५ चित्रविज्ञान४६ सिद्धांत४७ वेदांत४८ गो
४९ इंद्रजालकला५० विनयकला५१ श्राचारविद्या५२ श्रागमश्रवण५३ दान५४ ध्यान५५ पुराण५६ इति हास्यकला५७ इत्रिम५८ संस्का
कर्म५९ वश्यकर्म६० चित्रकर्म६१ पाषाणकर्म६२ नेपथ्यकर्म६३ धर्मकला६४ मंत्रकर्मकला६५ रूमंदस्वर६६ श्रुत६७ मन६८ योग
६९ श्रश्वकला७० गुप्ति७१ ॥ ७२ कला७२ अथवा स्त्रीकला चतुःषष्टि कलानाम कथ्यते नृत्य१ श्रौचित्य२ चित्र३ वादित्र४ मंत्र५ तंत्र६
ज्ञान७ विज्ञान८ दंभ९ जलस्तंभ१० गीतमान११ तालमान१२ मेघवृष्टि१३ फलाकृष्टि१४ आरामरोपण१५ श्राकारगोपन१६ धर्मविचार१७ शकुन
सार१८ क्रियाकल्प१९ संस्कृतजल्प२० प्रासाद२१ नीति२२ धर्मनीति२३ वर्णिका२४ वृद्धि२५ सुवर्णसिद्धि२६ सुरभितैलकरण२७ लीलासंचरण२८ गजतुरंग
परीक्षण२९ पुरुषस्त्रीलक्षण३० सुवर्णरत्नभेद३१ श्रष्टादशलिपिपरिच्छेद३२ तत्कालबुद्धि३३ वस्तुसिद्धि३४ वैद्यक्रिया३५ कामक्रिया३६ घटभ्रम३७ सारि
परिश्रम३८ श्रंजनयोग३९ चूर्णयोग४० हस्तलाघव४१ वचनपाटव४२ भोजनविधि४३ वाणिज्यविधि४४ मुखमंडन४५ शालिखंडन४६ कथाकथन४७ पुष्पगुंथन४८ वक्रो
क्ति४९ काव्यशक्ति५० स्फारविशेषवेष५१ सकलभाषाविशेष५२ अभिधानज्ञान५३ आभरणपरिधान५४ भृत्योपचार५५ गृहाचार५६ परिलिकर्म५७ रंधन५८ केशबंधन
५९ वीणानिनाद६० वितंडावाद६१ श्रंकविचार६२ लोकव्यवहार६३ वशीकरण६४ अथ सकल इति चतुःषष्टिकला धर्मध्यान इति स्त्रीकला कीर्तिता प्रोक्ता ८४ दश
क ज्ञानमुक वेदर्न वमवामनाय पद्मावती धर्मराट नायकदेव श्रावभक देवकाय कलिंग३१ ईषिकदेव३२ उरुपदेव श्रलक नागदेव वीर्यलाभ
श्र गणनाथ४२ तामलि४७ श्रयुध्यरिध श्रायुवीर्य वजीवसुर नायसनवर कालिक आनर्त साविक चय गद्देस रुस देव कच्छनाथ सुराष्ट्र न
देव कलीयक मूलकेश्वर वालीक कांबुज महनाथ सावक आत्रेय वत्सन आभीर वानंद्य वासन केकेय सिंह सौवीर गंधार गंगोदेव तोष गौर
कलाकाश सरदेव द्रवाल कालिंजर अवंतिनाथ वेदपति किष्किंधि निषध दशार्णनाथ कामरूप लोपलदेव कोशल पयविनिजाय वैदेश वेदद
कच्छपति ए सर्देश्वर वजूनाथ सोड नड नेलस वरूनाथ कर्णाट गूजर काश्मीर एए श्रंगादेव १०० इतिकयसदेवमुत नामानि संस्तर्मः

॥ ऐ एवं वाणिवंदरस विखंवो वितंबतएव म्ही जगनाथ एकवर्षसहस्र छद्मस्थपर्याय पाली अनेक उपसर्ग सहितालक्षा पछि पारणामि सर्व संविदस्वाय
थका सिद्धाजामि तिहां अनेक संवर अनर्गल धोदोदस्वी दिन पछि केवले अमविहरा हिवाभी मनसाम थाय तेस्यानि एकदाप्रस्ता विवारिवदीक्षाय
श्री भवरिवा विहार करता एकदा कलवीताक्षपाशे वाणिजाइस्वै तेस्विते कणसी बहुलस्यवगाटे पछि बलदनी वाघ उत्कटवाइ तेविते कामा
श्रीबलदने परप्राणकरी परीसहकर दुहें स्वामिना वितंवितवं जे बलदने निरापराध वरानव कारिठ पछि विकृमे मोद्याश्चिछ्याइनदी पहनि
स्ट्रि भोस्यानदी पछिभमले हिवंतवं तेसं थाशमकपमिक मनएक करता श्रालोअणही तेपछि नविस्यस्थ आयु तेकाने सवर्धी नगरतन वरसदिनओदा
रणम्यानदी तेह्वेश्वो किमवत्साथि आसहस्रावाणइ नेहनेपछिमवासमाहर तिवासिपनाकदिवाजामा अलेआहार विलासवाइ
नही तिहांधकी पाटालक्या कोइने भयहारीलक्षा कोएकयोगिवधा कोएकसंन्यासी यथा वृमफल नाहारलेता थया तिहांथकी एहनीविहि
ई इविनवंतमहाविदेह क्षेत्रमांहि जेमनेकरी कमांकपार्श्वे कुमनंदबसुजीव बीमुंजरनवजीव वासुवाहनव लगृहीव योगुश्रीसिजीव पांचमु मुंदरी
मुजीव बकोसेबासमभीव प्रजीवमहाविदेह क्षेत्रमांहि एकताकइ तिहांथकी बीसितवकारि आदाश्रवधा श्रीनेम्या शकुनमवलरथ तेड्थयो ते
जेनारनिमितेश्राधीडस्वामी पाश्यसा निवाविलोकस्या भीनेदेवता मिल्या पतलीकयो मंडपमें संतानलूसे आदीश्वरपथस्या निवारिइहाथोडर
तो आपणपोतिदंतजातीभावकाषक पनमांहि विनवइ भगवननेश्राहारनी वपगुइ इमचितवसारकमानेसोलकोनाम दास भजस्वाहतातेसफला
आहारलेउ तेस्वामीपतिश्रामंत्रो निवारिस्वामी इहांभवजीमलोपमाध्यो तेनविहांपरिमणोबोलो जेस्ता मिश्रतकंथ मिक्रिया मांविले अनेवणाउ बोलावे
विवासमेयकर तिदीसंदेवि पक्कवाईवे एनेवेवाने जो श्रागलिपणि मासंके कोमनीध नूनदी तिकारिसनो दावसोमो जेवक मकी क्रतल्प आकर
गणवि तमावीमध्य श्री बिसति ज्ञाननांघवि संग्राममांगणि जेश्रागलि पणिपरिवाह्यकरवालोमा निवारिनमवनेविहाय सरीषाराषा परसलीष रिखु
वांसकुमारि सेलको भूरसविहराय्य पछि बिंदु मात्रपमित मो हुमदी मांससे घकारस पीपारगुकी इतिहांसाडी वारकोजिसोनीवात लीहांति
वई देवइ कलिवगो निहांथकी विहारकाथी इसकरता मसत्मए कवरसलमिवदमस्तरया पछि आम्नाय भइके वलज्ञान उपर जांणी अमकसास
कएसिनाभिवनपालक तेहोजईवकाव त्रिनरथ तेवसे मणीदेषी निवारिसकल कदिमहितवादवाश्रावा निवारिसगवेतनीमाना घरोनाप्रकारी
वांदवानाव्यां पछिली निवारिनगरतिवाकालीधी निवारिमरुदेव्यासामिनी तरवश्रनिकहमजिमाकरोअतपुत्रीतरको किसिहइ अनेतेराज्य
लोगविइ पछलि निवारिनगरति संसोसआ निवारिमा चेतमइदवस्याल रसमस्तेवा मातामेलइव्यावा हाथाकुंवरि निशिवका समो सरणायासइ 3
श्री॰ भथा निवारिबोअमपरमांगवाधीप्रस्तसमीएसंचली निवारिमरुदेव्या भालानंदवरूपीसंमय पो तिवारिवसा मिनांयक इहरिवयां भारसमोसर

णवेढ़ा महाविदेहमांणे इथीमनमांहिंचींतवइं धिगधिग संसारमोहनें गणिजेयउ जेहेंछत्रमिथि विरहि करी आ पिपटलव त्यां पछि एवें के
दिहा नारी सारकोथी नहीं। तेरसंसारमांहि कोइ केहेनो नहीं। एहवुं चिंतवतां प्रेमदनाक सदियगउ तिवारि तिहां केवलज्ञानऊपनउं श्रेन
गनकेवली थया। मोक्षफलना देवताकायालेईगया। वातनावंदनसेइ तिप्र कालो पछि तरहम मेमरले आमा। पांचसइ छत्रनरस्त्रना अनेसमस
डे पुत्रनाछत्र एवंआरस्मइं छत्रपेदिक्षालीधी तिहां भरतेआरसज्यउ ठहरुया वांवादी दरिस्त्रावीदेवासाभनावात्या सातिहजार स्वरसमधइमनसाधनोलागो।
मांधीयरिद्या व्या नोपछि वकमाचिनवइ भइ पछि उरो हतिकल्प स्वापा जिहां लमिका एम आहा नमंभो होई तोलाभिआ सुधमालाइनाति उपहारेन
वो एलाईआणनमांति तिका रिहनतो कालोक हिवराइसे पारशे आगमनो तिकारि कहि कपन देवनादेवा दधाकइ तेनोगहुं उहारस्त्रा एण
तोभा हे तिकारि छहमाथु। तिहां मनमां हिमनकीआडापूनाईयरिका स्वामीपासइलीधी सम्यक्त्वया तेमनदेवासरसमें आव्या तोपणि चक्र आवइ
नहीं तिकारि पेलीउरा हिनमेवइ तेलोकमुखा सबलज्ञानामानेभवी तिकारि वाज्यलम शिरस्नमे कल्यो तिवारि वा फलककहिवा लागो ताग
वंतराली उरलीआज्ञा दानेनहीं तोसुहकरो निश्चय रिजु हुमानी तेसुनकरतो वारस्वर मनकीगामां तिवारिहड वसीगा जोकरीलिवारस्वाकामा तेय
छोटतिनहीं तिकारिइडकउआ जे कर कनो कृयकिमकरो वो उतेनेक माहारा हिंतफो तिवारि पांच छुकमाप्यां इहडुकरा पछि सहुकर सुहिस्तु हउ
इंनहुकथ आस्तुहुमउ पयो सहुकरनोकथमिंदारुषा पछितरने को मकरीचक्रप्रवस्था तेचक्रनोअपमानवनकारि पावे आव्या तिकारि बाललने
कोयवरी सुहिका पानी आव्यो तारिवेवताय छ्यमावेमलिहाथ पक त्या पछि विन मांहे सिवेक रूप चं मिश्र रपरा मेजेह ने लोकने को ताइयितांम मांभाने
हनेने शुहि इद्यारुजगामी नो एसुंहि मो वा प्रहेतो तोभकइसइ तो एहुक सिंघातिम सकिए वसहितो भवकारीय नो हल्पा तिहां जे कालु समालीए पछि
मनमांहिंचीतवइ जो आ चरपासिजमंनो कुछ कवी श्री माकणा भमातृ नाईहइं तेहनें वांदवाप स्ने एह वो चिंत वी तिहां कारु सार्ग रिसा एक वर
सवलिंग पछि भांतमें आ रत्नी संदरी मोकल्यां नाउ नाई तेह योन्नकाउतारो तिवारि जसने कहि संप्र शां इ तहि इ केवल महि छकि एहसांभली वात
वइ सर्वताप्राकीमु तो हम्रीकिंहां एहबं चिमासगं जंघजे मोभयाहेकारस पी बी हामुपसमो सुं ज्यो स्ने वाहि वांतो मोकल्यु कारवो एहवु विमासीका
उमगापारी संहमो वा रो तेनजइ केवलज्ञानक पर्स॥